रामायण

श्रीमद्बुल तदेव बीजममलं यस्याङ्कुरश्चिन्मयः।
काण्डैः सप्तभिरन्वितोऽतिविततो मुन्यालबालोदितः॥
पत्रैस्तत्त्वसहस्रकैः सुविलसच्छाखाशतैः पञ्चभि-
श्चात्मप्राप्तिफलप्रदो विजयते रामायणस्वस्तरुः॥
वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामाम्भोनिधिसंगता।
श्रीमद्रामायणी गङ्गा पुनाति भुवनत्रयम्॥
वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना॥
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम्॥
कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥
यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसकलमषम्॥

→ रामायण एक श्रेष्ठ कल्पवृक्ष है। वेद उसका बीज है, बुद्धि (महत्तत्त्व) के अभिमानी स्वयं हिरण्यगर्भ ही उसके अङ्कुर हैं। बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, युद्ध और उत्तर- ये सात काण्ड ही उसके सात तने हैं। इसका विस्तार बहुत बड़ा है। मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकि इसके थाले हैं। चौबीस हजार श्लोक ही इसके पत्ते हैं और पाँच सौ से अधिक सर्ग इसकी सुन्दर शाखाएं हैं। आत्मसाक्षात्कार ही इसका फल है। रामायण को हम गङ्गा भी कह सकते हैं। हिमालय की भाँति वाल्मीकि ही उसके उद्गमस्थान हैं। जिस प्रकार देवनदी गङ्गा समुद्र में जा ~~मिलती है~~ मिलती है, उसी प्रकार रामायण के गन्तव्य स्थान स्वयं भगवान रामचन्द्र हैं। वही इसके प्रतिपाद्य हैं, उन्हीं की प्राप्ति में इसका पर्यवसान है। त्रिपथगामिनी भागीरथी की भाँति यह भी तीनों लोकों को पवित्र करने वाली है। जो केवल वेदों द्वारा जानने में आते हैं, वे ही परम पुरुष जब राजा दशरथ के यहाँ पैदा हुए, तब उनकी देवभाषारूपी साक्षात् वेद भी महर्षि वाल्मीकि के मुख से रामायण के रूप में

Scanned with CamScanner

मकर हुए। वाल्मीकि मुनियों में सिंह के समान हैं। उन्होंने कविता रूपी वन में विचरण करते हुए रामकथा की गर्जना की। उनकी गर्जना को सुनकर कौन ऐसा है, जो मोक्षरूप परमगति को नहीं प्राप्त कर लेगा। वाल्मीकि को कोयल की भी उपमा दी जा सकती है। वे कवितारूपी वृक्ष की शाखा पर बैठकर अत्यन्त मधुर शब्दों में बड़ी मधुरता के साथ राम-नाम की कूक लगा रहे हैं। उन कोकिल बने हुए वाल्मीकि की मैं वन्दना करता हूँ। जो रामचरितरूपी सुधासागर का पान करते हुए भी सदा अतृप्त ही बने रहते हैं, उन निष्पाप वाल्मीकि मुनि की मैं बार-बार वन्दना करता हूँ।

वाल्मीकीय रामायण महर्षि वाल्मीकि की वह दिव्य वाणी है, जो मरणधर्मा मानवों को श्रीरामचरित्र की स्वादु सुधा पिलाकर अमरत्व प्रदान करने के लिए धराधाम में अवतीर्ण हुई है। इसके द्वारा युग-युगान्तरों से असंख्य नर-नारी श्रीरामकथा की पावन मन्दाकिनी में निरन्तर अवगाहन करके पाप-ताप से रहित हो अनन्त शान्ति-लाभ करते आ रहे हैं।

रामायण के अन्तर्गत दो शब्द हैं - 'राम' और 'अयन'। अयन शब्द मार्ग और आश्रय का वाचक है। राम ही जिसके आश्रय हैं, वह रामायण है। अतः रामकथा को आधार मानकर लिखा जाने वाला ग्रन्थ रामायण कहलाता है। इसका स्वाध्याय करनेवाले मनुष्य का जीवन भी रामायण ही होना चाहिए, उसे राम का ही आश्रय लेना चाहिए। रामायण का दूसरा अर्थ है - राम का मार्ग। राम जिस मार्ग से गये हैं, वही प्रत्येक मनुष्य का मार्ग है। राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं, उनका हर एक आचरण अपनी शक्ति के अनुसार हमारे लिए अनुकरणीय है। जिस मार्ग पर चलने से राम मिलें, वह भी राम-मार्ग या रामायण है। इस प्रकार अनेकों अर्थों को अभिव्यक्त करती हुई रामायण कथा यह शिक्षा देती है कि 'हम राम का भजन करें, राम की शरण लें और राम की तरह ही अपने वर्ण तथा आश्रम की मर्यादा का पालन करते हुए धर्मानुकूल आचरण करें। स्वार्थ का त्याग करके गुरुजनों की कठिन-से-कठिन आज्ञा को भी शिरोधार्य करें और यथाशक्ति दूसरों के हित-साधन में

Scanned with CamScanner

संलग्न रहें।

वाल्मीकीय रामायण काव्य होने के साथ ही सच्चा इतिहास भी है। इसमें एक अक्षर भी असत्य नहीं है। आरम्भ में स्वयं ~~भगवान~~ ब्रह्माजी "न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति' कहकर इसकी सत्यता प्रमाणित करते हैं तथा उत्तरकाण्ड में 'सत्यवाक्यमनावृतम्' कहते हुए इसी बात की पुष्टि करते हैं। इसके अतिरिक्त महाभारत तथा विभिन्न पुराणों में भी रामायण और रामचरित का वर्णन मिलता है। इन बातों से भी रामायण की ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

इस रामायण में कुल चौबीस हजार श्लोक, सौ उपाख्यान, पाँच सौ सर्ग तथा उत्तरकाण्ड के अलावा छः काण्ड हैं। इस बात का प्रतिपादन बालकाण्ड के चौथे तथा उत्तरकाण्ड के 94वें सर्ग में किया गया है।→

"संनिबद्धं हि श्लोकानां चतुर्विंशत्सहस्रकम्।
उपाख्यानशतं चैव भार्गवेण तपस्विना ॥
आदिप्रभृति वै राजन् पञ्चसर्गशतानि च।
काण्डानि षट्कृतानीह सोत्तराणि महात्मना॥"
(7/94/26-27)

युद्धकाण्ड के अन्त में ग्रन्थ समाप्ति के ढंग की फलश्रुति दी गई है (6/128/108-125)। इसका कारण यही जान पड़ता है कि पहले महर्षि ने युद्धकाण्ड तक ही लवकुश को पढ़ाया था, उसके कुछ काल बाद उत्तर के प्रसङ्ग का स्वाध्याय कराया। अन्त में सबको एकसाथ जोड़कर ग्रन्थ को एक व्यवस्थित रूप दे दिया गया।

वाल्मीकि कौन थे? यह प्रश्न जनमानस को हमेशा से उद्वेलित करता रहा है। संस्कृतललितसाहित्य का इतिहास के लेखक डॉ॰ कुँवरलाल व्यासशिष्य ने इस प्रश्न के समाधान का स्तुत्य प्रयास किया है। उनके विचार का उल्लेख आगे किया जा रहा है→

चौबीसवें व्यास वाल्मीकि का मूलनाम ऋक्ष था, वे वैदिक ऋषि थे, जिन्होंने महाभारत काल से लगभग 2000 वर्ष पूर्व आदिकाव्य रामायण की रचना की। इतिहासपुराण के अनुसार

*ऋजयंश्च पञ्चदशैतिहासपुराणम्/

Scanned with CamScanner

वाल्मीकि प्रचेता (वरुण) के वंश में उत्पन्न हुए थे और च्यवन भार्गव के पुत्र थे। प्रसिद्ध बौद्धकवि अश्वघोष ने लिखा है कि जिस पद्य का निर्माण च्यवन ऋषि न कर सके उसका निर्माण उनके पुत्र ने किया -

वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्यम्।
जग्रन्थ यन्न च्यवनो महर्षिः ॥
(बुद्धचरित 1/43)

महाभारत के वनपर्व में लिखा है कि च्यवन तप करते हुए 'वाल्मीकि' हो गया ~ 'स वाल्मीकिरभवदृषिः' (122/3)। च्यवन वल्मीकि का पुत्र वाल्मीकि कहलाया। मूलनाम उसका 'ऋक्ष' था।

श्रीरामशंकर भट्टाचार्य के ~~मतानुसार~~ मत का उल्लेख करते हुए व्यासशिष्य का कहना है कि श्रीमद्भगवद्गीता में जहाँ व्यास नाम का उल्लेख आया है, वह वस्तुतः वाल्मीकि के लिए ही है ~ 'मुनीनामहं व्यासः कवीनामुशना कविः'।

रामायण में इस ग्रन्थ की काव्य कोटि की चर्चा नहीं की गई है। इसको आख्यान, चरित, वृत्त, कथा, आदिकाव्य, इतिहास, संहिता, पुरावृत्त काव्य आदि नाम दिये गये हैं (बालकाण्ड सर्ग 1 और 2 तथा युद्धकाण्ड सर्ग 128)। इन नामों से स्पष्ट है कि रामायण की कोई काव्य कोटि इस युग में निर्धारित नहीं थी। रामायण सर्ग में विभाजन वाली अपनी कोटि की प्रथम रचना है। इसका विभाजन काण्डों एवं सर्गों में हुआ है। इस दृष्टि से इसे सर्गबन्ध कह सकते हैं। परवर्ती काल में सर्गबन्ध नाम महाकाव्य का पर्यायवाची हो गया। यह 'सर्गबन्धो महाकाव्यम्' - इस परिभाषा से स्पष्ट है। वास्तव में रामायण महाकाव्य है। इस कोटि का आभास इस श्लोक से प्राप्त होता है -

"किं प्रमाणमिदं काव्यं का प्रतिष्ठा महात्मनः।
कर्त्ता काव्यस्य महतः क्व चासौ मुनिपुंगवः॥"
(7/94/24)

अर्थात्
इस महाकाव्य की श्लोक संख्या कितनी है? इसके रचयिता महात्मा कवि का आवासस्थान कौन-सा है? इस महान् काव्य के कर्त्ता कौन मुनीश्वर हैं और वे कहाँ हैं?

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

इस श्लोक में महतः काव्यस्य का समस्त रूप 'महाकाव्यस्य' है। परवर्ती युग में महाकाव्य की जो परिभाषाएं बनीं, उनके सभी लक्षण रामायण में पूर्णतया घटित होते हैं।

काव्यमीमांसाकार राजशेखर ने रामायण को 'परिक्रिया' कोटि का इतिहास मानते हुए कहा है—

'पुराण-प्रविभेद एवेतिहासः' इत्येके। स च द्विधा परिक्रियापुराकल्पाभ्याम्। यदाहुः -

"परिक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा॥
स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायकाः।
तत्र रामायणं भारतं चोदाहरणे॥" -

२४००० श्लोकों में निबद्ध होने के कारण रामायण को 'चतुर्विंशति-साहस्री संहिता'- इस नाम से अभिहित किया जाता है। अधिसंख्य श्लोक अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध हैं।* गायत्री मंत्र में 24 वर्ण होते हैं, अतः यह मान्यता है कि उसको आधार मानकर 24 हजार श्लोक बनाये गये हैं और प्रत्येक एक हजार श्लोक के बाद गायत्री के नए वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है। रामचरित का सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन होने के कारण यह धार्मिक ग्रन्थ एवं आचारसंहिता माना जाता है।

शायद इसीलिए आचार्य वाचस्पति गैरोला का कहना है—"'रामायण' एक दिन अपने अकेले निर्माता की कृतिमात्र रही होगी; किन्तु आज वह कोटि-कोटि नर-नारियों के घर-घर की वस्तु है। 'रामायण' निःसन्देह एक महान् कवि की महान् कृति है।"

Scanned with CamScanner